सप्तम अध्याय

'बूँद और समुद्र' उपन्यास का उद्देश्य --

सप्तम अध्याय

'बूँद और समुद्र' उपन्यास का उद्देश्य --

आधुनिक युग में उपन्यास विधा का महत्व साहित्यिक ,सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बढ गया है । संस्कृत में उपन्यास की व्याख्या इस प्रकार की गयी है --

उपन्यास प्रसादनम् याने प्रसन्न करनेवाली कृति को उपन्यास कहा जाता है । प्रेमचंदने उपन्यास को मानव जीवन का चित्र माना है । मानवचरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को खोलना उपन्यास का मूल उद्देश्य होता है ।

उपन्यास का मूल उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना होता है । उपन्यासकार अपनी कृति में विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेकर उसके आधारपर मानव जीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन दर्शन को प्रस्तुत करता है । उपन्यास का मूल उद्देश्य मनोरंजन करना ही होता है । उपन्यास मनोरंजक तभी पाठक एक बार नहीं बार-बार पढने की कोशिश करेंगे ।

उपन्यास में मनोरंजकता की तरह समाजहित का भी ध्यान रखा जाता है । उपन्यास का मुख्य विषय मानव और उसका चरित्र है । उपन्यास मानव जीवन से संबंधित होता है । यह यथार्थ रुप में, घटनाओं को वास्तविक रुप में ग्रहण न करके उनको कल्पता के सहाय्यतासे तथा रुप प्रदान करता है -- परंतु यह कल्पनापरक रुप भी होता वास्तविक ही है ऐसी वास्तविकता जो यथार्थ तथा स्वाभाविक लगे । उपन्यासकार का कर्म बडा उत्तरदायित्वपूर्ण होता है,प्रकारान्तर से वह समाज को नवीन दिशा बोध करानेवाला होता है, अत: उसके लिए आवश्यक है कि वह तटस्थ दृष्टिकोण अपनायें और समस्त वादों का तथा मतभेदों से दूर रहकर निष्पक्ष विचार रखें । एक समीक्षक की तरह उपन्यासकार भी युग - निर्माता होता है और मानव जीवन का व्याख्याता होने के कारण इसमें मानवीय

अनुभूतियों का विशदता से वर्णन होता है। इसलिए उपन्यास के लिए समाजहित का बडा ही महत्वपूर्ण स्थान रखा जाता है।

' बूँद और समुद्र ' की रचना व्यापक सामाजिक उद्देश्य से अनुप्राणित होकर की गई है। उपन्यास की मूल समस्या व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंध की है। समाज में हर व्यक्ति की अपनी महत्ता होती हैं --

' हर बूँद का महत्व हैं, क्योंकि वही तो अनंत सागर हैं। एक बूँद भी व्यर्थ क्यों जाए ? उसका सदुपयोग करों।' १

इसके साथ ही व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत चिंतन में समष्टिगत भावना का ध्यान रखना आवश्यक हैं --

' व्यक्ति-व्यक्ति अवश्य रहें पर उसके व्यक्तिवादी चिंतन में सामाजिक दृष्टिकोण का रहना आवश्यक हैं।' २

व्यक्ति और समाज की उन्नति दोनो के साथ-साथ चलने में हैं। आज व्यक्ति अपने परिवेश से टूटकर स्वकेन्द्रित बनता जा रहा है। अंत में सज्जन कहता हैं --

' मनुष्य का आत्मविश्वास जानना चाहिए, उसके जीवन में आस्था जागनी चाहिए। मनुष्य को दुसरें के सुख-दु:ख में अपना सुख-दु:ख मानना चाहिए। विचारों में मतभेद हो सकता है, विचारों के भेद से स्वस्थ द्वन्द्व होता है और उससे उत्तरोत्तर उसका विकास भी पर शर्त यह है कि सुख-दु:ख में व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट संबंध बना रहे, जैसे बूँद से बूँदजूडी रहती है, लहरों से लहरें, लहरों से समुद्र बनता है, इसीतरह बूँद में समुद्र समाया हुआ हैं।' ३

एक मुहल्लें के चित्रण के माध्यम से नागर जी ने देश के वर्तमान स्वरुप को उद्घाटित किया हैं।

---

१ अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र - पृ.६०३।

२ - वही - ,, पृ.५८३।

३ - वही - ,, पृ.५८३।

उपन्यास में चित्रित समस्याओं को के तीन वर्ग किये जातें है --

१) वैयक्तिक समस्याएँ --

व्यक्ति और समाज के संबंधों की व्याख्या करते हुए नागर जी ने व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं का भी उद्घाटन किया हैं । आज के मध्यमवर्गीय व्यक्ति की पीडा, घुटन, कुण्ठा,अविश्वास,अनैतिकता की स्थितियों को महिपाल के चरित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है । वनकन्या ने समाज में व्याप्त वैयक्तिक समस्याओं का उद्घाटन अनेक स्थलोंपर किया है । नागर जी ने पात्रों को सामाजिकता की ओर अग्रेसर होना दिखाया है ।

२) राजनीतिक समस्याएँ --

प्रस्तुत उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीतिक स्थिति पर भी स्थान-स्थान पर प्रकाश डाला है । चुनाव और सत्ता की राजनीति,चुनावों की हुल्लडबाजी ,भ्रष्टाचार आदि का रहस्योंद्घाटन प्रस्तुत उपन्यास करता है,वनकन्या वर्तमान राजनीतिक पार्टियों के संबंध में एक स्थान पर कहती है --

" हमारी पॉलिटिकल पार्टियाँ आम तौर पर समाज से कटकर सत्ता के पीछे दौड रही हैं ।" ४

३) सामाजिक समस्याएँ --

स्वातंत्र्योत्तर भारत की अनेक सामाजिक समस्याओं का वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है । सबसे महत्वपूर्ण समस्या स्त्री और पुरुष के पारस्परिक संबंधों की है । स्त्री-पुरुषों के तेजी से बदलते हुए संदर्भों को चित्रित किया है । नारी शोषण, अंतरजातीय विवाह,अवैध प्रेमसंबंध आदि उपन्यास की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ है ।

" बूँद और समुद्र " में मध्यवर्गीय नारी की विवशता का यथार्थ चित्रण किया है । महिपाल की पत्नी और वनकन्या की भावज नारी शोषण के ज्वलंत उदाहरण है ।

---

४ अमृतलाल नागर - बूँद और समुद्र " - पृ.१५० ।

नारी की समस्त व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं के मूल में उसकी अर्थिक पराधीनता ही प्रमुख है। नागर जी ने कहा युग-युग से नारी आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर आश्रित रही। परिणामत: वह पुरुषों का दास्यत्व स्वीकारने को बाध्य हुई। नारी शोषण के मूल में नारी की आर्थिक पराधीनता है। अर्थिक पराधीनता के कारण उत्पन्न नारी की विवश एवं शोचनीय स्थिति का वर्णन ' बूँद और समुद्र ' में हुआ है।

नागर जी ने ' नारी समस्या ' पर प्रगतिशील दृष्टि से विचार किया है। उन्होंने नारी की स्थिति में सुधार लाना आवश्य माना है और ' बूँद और समुद्र ' में साम्यवादी चेतना से संपन्न वनकन्या के चरित्र का सृजन कर के --

" उससे अर्थिक स्वतंत्रता का नारा लगवाया है।"[५]

प्रस्तुत उपन्यास की वनकन्या और शीला ऐसी नारियाँ है, जो अर्थिक दृष्टिसे स्वालंबी है और युगीन चेतना से प्रेरित भी है।

प्रेमसंबंध में चित्रा राजदान अनेक पुरुषों से संबंध रखती है। अवैध प्रेम संबंध में इच्छा के विरुध्द शादी होने के कारण पति-पत्नी शादी के बाद भी अनैतिक संबंध रखते हैं। महिपाल और डॉ. शीला के अवैध प्रेम संबंधों को सामाजिक मान्यता भी दी है। महिपाल और उसकी पत्नी की मूल-समस्या यहाँ है दोंनो भी एक दूसरें से अतुष्ट है।

नागर जी ने उपन्यास में प्रेमविवाह और आंतरजातीय विवाह की समस्या का वर्णन किया है। " बूँद और समुद्र " में सज्जन और वनकन्या विवाह से पहले एक दूसरे के प्रेम में फ़स जाते है। एक दूसरें रूचियों एवं स्वभाव के गुण को जान लेते है। उनका यह प्रेम संबंध शादी में बदल जाता है। इसी उपन्यास में मि. वर्मा और तारा का आंतरजातीय प्रेम-विवाह सफल हुआ दिखाया है।

---

५ डॉ. त्रिभुवनसिंह " हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद " - पृ.४०८।

निष्कर्ष --

" बूँद और समुद्र " में लेखक ने वैयक्तिक समस्याओं में व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं को उठाया है। आज के मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीडा, कुण्ठा, अविश्वास, अनैतिकता आदि का उद्घाटन किया है। उसके साथ ही राजनीतिक समस्याओं के ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। चुनाव और सत्ता की राजनीती, चुनावों की हुल्लड्बाजी, भ्रष्टाचार आदि का रहस्योद्घाटन इस उपन्यास में किया है। वैयक्तिक, राजनीतिक समस्याओंके साथ ही सामाजिक समस्याओं का वर्णन भी इस उपन्यास में किया है। सबसे महत्वपूर्ण समस्या स्त्री और पुरुष के पारस्परिक संबंधों की है। स्त्री-पुरुषों के तेजी से बदलते हुए संदर्भों को चित्रित किया है। नारी शोषण, आंतरजातीय विवाह, अवैध प्रेमसंबंध आदि उपन्यास की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ है।

" बूँद और समुद्र " का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के सामंजस्य को प्रस्तुत करके युगीन जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करता है।

समग्र रुप में इस उपन्यास की मूल समस्या व्यक्ति और समाज परस्पर संबंध की है और यही समस्या प्रभावी बन पडी है। इसे नागरजी की प्रतिनिधि रचना माना जा सकता है। लेखक की संपूर्ण विचारधारा एवं जीवनदर्शन का प्रतिबिंब इसमें दिखाई देता है। लेखक की प्रगतिशील दृष्टि भी इसमें व्यक्त हुई है।